Vol 5, Issue 7, July 2025 www.ijesti.com E-ISSN: 2582-9734
International Journal of Engineering, Science, Technology and Innovation (IJESTI)

वैदिककालीन समाज में स्त्रियों की शिक्षा

सोमलता
शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

डॉ0 पूनम बाला अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

सारांश

स्त्री शिक्षा प्रत्येक समाज के विकास का प्रतीक है। यदि कोई समाज विकसित और सभ्य है तो यह निश्चित हो जाता है कि उस समाज की स्त्री शिक्षित और सुसंस्कृत होगी। एक स्त्री का अपने परिवार एवं समाज के प्रति बहुत बड़ा योगदान होता है। यदि नारी शिक्षित होगी तभी वह अपने परिवार और समाज को भी शिक्षित रख सकेगी और समाज को सभ्य बनाने में मदद कर सकेगी। वैदिक काल में इस बात को महत्वपूर्ण माना गया। इसी कारण से वैदिक काल में महिलाओं को भी पुरूषों के समान ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। स्त्री के द्वारा स्त्रियों में श्रेष्ठ और महान विचार प्रकट होना प्रारम्भ हुआ। जिससे ऋग्वेद जैसे महावेद में स्त्रियों द्वारा मंच एवं लोककथायें रची गयीं। वैदिक काल में नारी की शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया जाता था। ज्ञान एवं शिक्षा में महिलायें पुरूषों से किसी प्रकार से कम नहीं थीं। ऋग्वैदिक काल में पुत्र के ही समान पुत्रियों का भी उपनयन संस्कार होता था। ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों को ऋषि बनने की पुरूषों की भाँति छूट थी। स्त्रियां अपने पति के सभी धार्मिक कार्यो में सहभागिनी होती थी। उन्हें पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा भी प्राप्त थी।

प्रस्तुत शोध पत्र में वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा के विषय में बताने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

वैदिक काल पूर्व वैदिक काल एवं ऋग्वैदिक काल और उत्तरवैदिक काल (जो कि यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद, के अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् आदि का रचना काल था) के भेद से दो भागों में बंटा था। भारतीय परम्परा के अनुसार ब्रह्मा के द्वारा ऋषियों को मंत्रों का प्रकाश दिया गया। वे मंत्र उन ऋषि के पुत्रों एवं शिष्यों के माध्यम से कुल की

परम्परा में सुरक्षित रहे। इस प्रकार प्रत्येक ऋषि कुल एक लघु विद्यालय के समान था जहाँ रहकर विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था।

गुरूकुल में ऋषियों के द्वारा पाठ को कण्ठस्थ कराया जाता था। उस समय तप, आत्मदर्शन की प्रकिया, प्रवचन एवं उच्चारण पर बल दिया जाता था। मानसिक चिन्तन और ध्यान से ज्ञान प्राप्त कराया जाता था। उत्तरवैदिक काल में सम्भवतः लेखनकार्य में उन्नति होने लगी थी। शिक्षण पद्धति में पाठ का उच्चारण, भाष्य व्याख्या एवं वाद–विवाद सम्मिलित थे। जो देश में वास्तविक ज्ञान का प्रचार करने वाले 'चरक' विद्वान थे। ये देश में वास्तविक ज्ञान का प्रचार करते थे। वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया। इसी कारण से वैदिक काल में महिलाओं को भी पुरूषों के समान ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। उस समय शिक्षित एवं अनुशासनप्रद परिपक्व नारी ही ब्रह्मचर्या नारी कहलाती थी। परिपक्व नरियाँ शिक्षापूर्ण करने के पश्चात् ब्रह्मचारिणी कहलाती थी, तथा अपने पति के साथ इस प्रकार से घुल–मिल जाती थीं जिस प्रकार समुद्र के साथ नदी। यजुर्वेद में यह भी वर्णित किया गया है कि अविवाहित स्त्रियां वयस्क होने पर अपने पति का चुनाव स्वयं करने का अधिकार रखती थी। इसी प्रकार एक स्त्री जिसने ब्रह्मचर्य की शिक्षा प्राप्त कर ली है उसे ऐसे पुरूष के साथ विवाह करने की छूट होती थी जो उसके समान ही विलक्षण बुद्धि वाला और बुद्धिमान हो। जो स्त्री ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए इस परीक्षा को पास कर लेती थी और अनुशासित विद्यार्थी जीवन को व्यतीत कर लेती थी, उसे दूसरे आश्रमों में भी विवाह करने की सुविधा प्राप्त थी। ऋग्वैदिक काल में शूद्र (अनार्य/असभ्य) स्त्रियों में भी शिक्षा का प्रचलन था। उनकी शिक्षा वेदान्तिक न होकर शारीरिक एवं सांस्कृतिक थी। इस प्रकार आर्यो और अनार्यो के शिक्षा में काफी अन्तर था। अन्य वेदों में भी उल्लेख है कि नारी को भी ब्रह्मचर्य का पालन करने और विद्या अध्ययन करने की स्वतंत्रता थी। उत्तर वैदिक काल के जो साक्ष्य मिले है उनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नारी जाति को शिक्षा प्राप्त करने पर उस समय किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं था। उस समय की नारी शिक्षित हुआ करती थी किन्तु यह कहीं भी नहीं दर्शाया गया है कि वह नारी शिक्षक विवाहित होती थी या अविवाहित। उस समय की जो आर्य नारियाँ थी वह उत्तर दिशा की ओर अपनी शिक्षा प्राप्ति के लिए जाया करती थी। यह महिलायें उच्च शिक्षा को प्राप्त कर वाक् अर्थात् सरस्वती की उपाधि ले कर आती थीं। वैदिक ग्रन्थ में नृत्य और संगीत का उल्लेख भी मिलता है। इस सम्बन्ध में यह कहा गया है कि उस समय नारियों को ललित कला जैसे– नृत्य, गायन,

चित्रकारी इत्यादि की शिक्षा भी दी जाती थी। उत्तर वैदिककाल मे भी उन्हें संगीत और नृत्य की शिक्षा के साथ–साथ पाक शास्त्र की शिक्षा एवं दैनिक गृहस्थ जीवन की शिक्षा भी दी जाती थी। वेदांत में एक विदुषी (ज्ञानी महिला) स्त्री अत्रेयी थी, जिन्होंने ऋग्वेद की ऋचायें लिखीं और इस प्रकार इन्होने बौद्धिक गौरव तथा समान प्राप्त किया। लोपामुद्रा, अपाला, विश्ववारा आदि अनेकों स्त्रियाँ वैदिक सूक्तों की ऋषि थी। गोपा, घोषा, विश्ववारा, अदिति, यामी ये सभी वैदिक काल की प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी (ऐसी महिलयें जो ब्रह्म का ज्ञान रखती हैं और उसका प्रचार करती हैं।) महिलायें थी, इन्होने वैदिक साहित्य एवं संस्कृति में भी बहुत योगदान दिया। कहते हैं कि रण क्षेत्र में भी ये महिलायें कम कौशल नहीं दिखलाती थी। विश्पला ऋग्वेद में वर्णित एक महिला योद्धा थीं, युद्ध करते–करते वह जब घायल हो गयी तो अश्विनी कुमारों ने उनका उपचार किया। उपनिषद्ों में शिक्षित स्त्रियों के अनेक उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं। वृहदारण्यक उपनिषद में राजा जनक की सभा में गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच एक श्रेष्ठ वाद–विवाद का उल्लेख है। पुराणों में स्त्री शिक्षा का वर्गीकरण दो वर्गो में वर्गीकृत किया गयाः ब्रह्मवादिनी और सद्योवधू। ब्रह्मवादिनी वे स्त्रियां थी जो जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन करती तथा वेदों और शास्त्रों का अध्ययन करती। सद्योवधू वे स्त्रियां जो विवाह से पहले तक शिक्षा प्राप्त करती थी और फिर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करती थी। आध्यात्मिक ज्ञान में वृहस्तपति, भगिनी, भुवना, अपर्णा, एकपर्णा, एकपटला, मेना, घारिणी, शतरूपा, उमा, पीवरी, धर्मव्रता आदि का वर्णन पुराणों में मिलता है। वृहस्पति, भगिनी, भुवना के विषय में यह विख्यात है कि इन्होंने योग में सिद्धि प्राप्त की थी तथा आसक्ति भाव से समस्त पृथ्वी का भ्रमण भी किया था। वृहस्पति एवं भगिनी की तरह दक्ष कन्याओं को भी दोनों पुराणों में ब्रह्मवादिनी शब्द से सुशोभित किया गया हैं। मत्स्यपुराण में उमा के तप का वर्णन मिलता है जिसने अपने तप के लिए एक ऐसा स्थान चुना जो देवताओं के लिए भी दुलर्भ था। इन प्रसंगों से यह ज्ञात होता है कि कुछ कन्यायें अपने अभिष्ट की प्राप्ति के लिए योग और तपस्या में लीन रहती थी। अथर्ववेद से यह प्रामाणिक है कि ब्रह्मचर्य के अभ्यास से कन्यायें युवा पति पाने में सफल होती थी। वृहदारण्यक उपनिषद् से भी यह स्पष्ट होता है कि याज्ञवल्क्य की पत्नी संसारिक वस्तुओं का त्याग करके आध्यात्म की ओर परिवर्तित हो गयी थी। प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व तक नारी शिक्षा प्रचलन में थी, यह अलग बात है कि अब इसमें कुछ गिरावट आ गयी थी। भागवत पुराण में दक्षिण दिशा की दो विदुषी कन्याओं का प्रसंग है, जिनका नाम सुमति और सुमति है। ये दोनो

बहने थी और महान ऋषि शौनक की शिष्यायें थी। विष्णु पुराण की मीना और धारिणी भी ब्रह्मवादिनी योगिनी, एवं श्रेष्ठ ज्ञान से परिपूर्ण थी। सतरूपा अनन्य ब्रह्मवादिनी थी, इनका जन्म ब्रह्मा के वामांग से हुआ माना जाता है। ब्रह्मवादिनियों को केवल ब्रह्मचारिणी ही रहने का विधान नहीं था, बल्कि वे विवाह भी कर सकती थी। नारियों को अपने अध्ययन काल में ब्रह्मचर्य के पालन पर ध्यान देना पड़ता था। गृह कार्य के अतिरिक्त कन्याओं को ललित कलाओं की शिक्षा भी दी जाती थी। स्त्रियों को साहित्य और दर्शन के अतिरिक्त चित्रकला की शिक्षा भी दी जाती थी। गृहसूत्रों से यह पता चलता है कि इनके उपनयन संस्कार के पश्चात् समावर्तन संस्कार होता था। समावर्तन संस्कार ब्रह्मचर्य जीवन की समाप्ति के पश्चात् होता था। इससे लगता है कि सूत्र (संक्षेप में प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों को सूत्र कहा जाता है) युग में पुरूषों की हो भांति स्त्रियाँ भी शिक्षा प्राप्त करने के निमित्त ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करती थी। ऋषि तर्पण के समय गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, प्रतिकेशी इन ऋषि नारियों के भी नाम लेने का निर्देश दिया गया था। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्रियाँ मंत्रविद् और पंडित होती थी तथा बह्मचर्य का पालन करती हुयी उपनयन संस्कार कराती थी।

छात्राओं के वर्गः इसमें छात्राओं के दो वर्ग थे, जिनमें पहला सद्योवधू और दूसरा ब्रह्मवादिनी कहलाती थी। सद्योवधू उन छात्राओं को कहा जाता था जो विवाह से पूर्व कुछ वेद मंत्रों और याज्ञिक प्रार्थनाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेती थी। तथा ब्रह्मवादिनी उन्हें कहते थे जो अपनी शिक्षा को पूरा करने में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देती थी और इस प्रकार कुछ स्त्रियाँ जीवन पर्यन्त अध्ययन कार्य में रमीं रहती थी और वैवाहिक बंधन में नहीं बंधती थी। एक ऐसी ही ब्रह्मवादिनी स्त्री वेदवती थी जो ऋषि कुशध्वज की कन्या थी। ऐसी स्त्रियाँ प्रतिभा सम्पन्न थी। जो ज्ञान एवं बुद्धि में ही पारंगत नहीं है, बल्कि अनेको मंत्रों की उद्गांत्री थी। ये स्त्रियाँ दर्शन, तर्क, मीमांसा, साहित्य जैसे विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता हासिल किये हुए होती थी।

स्त्रियो की रूचिः वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति समाज में काफी अच्छी थी और उन्हे अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। वे धार्मिक कियाओं में भाग ही नहीं लेती थीं बल्कि कियायें सम्पन्न कराने वाले पुरोहितों और ऋषियों का दर्जा भी उन्हें प्राप्त था। उस समय महिलायें धर्म शास्त्रार्थ में पुरूषों की तरह ही भाग लेती थीं।

स्त्रियाँ और विद्वद्गोष्ठियाँः उन स्त्रियों की रूचि क्रमशः अध्ययन के क्षेत्र में बढ़ती गयी थी। दर्शन और अन्य जटिल विषयों में भी वे पारंगत होती गयीं। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी एक विख्यात दार्शनिक थी। इनकी रूचियां सांसारिक वस्तुओं एवं अलंकारों में न होकर केवल दशनशास्त्र में थी। इन्होंने अपने पति की संपत्ति में अपने अधिकार को अपने पति की दूसरी पत्नी के हित में त्याग दिया और मैत्रेयी ने केवल ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखी थी। राजा जनक की सभा में होने वाली विद्वद्गोष्ठी में गार्गी जो एक ब्रह्मवादिनी थी, इन्होने अपने प्रश्नों से याज्ञवल्क्य ही नहीं बल्कि पूरे विद्वत् समाज को अश्चर्य चकित कर दिया। वाल्मिकी और अगस्त्य जैसे महर्षियों से मैत्रेयी ने शिक्षा प्राप्त कर प्रसिद्धि प्राप्त की।

गृह कार्य की शिक्षाः नारी शिक्षा के अन्तर्गत नारी को गृह कार्य की शिक्षा अनिवार्य रूप से लेनी होती थी। प्रत्येक स्त्री को गृह कार्य का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक था। फूलों की मालायें बनाना, प्रसाधन तैयार करना, घर की सज्जा का कार्य धनी परिवारों में दासियाँ किया करती थी। किन्तु साधारण परिवार में ये सारा कार्य स्वयं परिवार की महिलायें किया करती थी। पति के सारे वस्तुओं की पूरी व्यवस्था पत्नी ही करती थी। कन्यायें अपने पिता के घर में ये सभी शिक्षायें प्राप्त कर लेती थी जिससे पति के घर जाकर वह एक श्रेष्ठ और अच्छी पत्नी सिद्ध हो सके। वात्सायन ने चौसठ योगिनी विद्याओं की शिक्षा देते हुए एक कुशल गृहिणी की विशेषताओं का उल्लेख किया है। गृह विज्ञान के अन्तर्गत सिलाई–कढ़ाई की शिक्षा भी दी जाती थी। वात्सायन ने संगीत और चित्रकलाओं का ज्ञान नारी के लिए ही वांछनीय माना हैं राजकुमारियों की योग्यता की परख उनके नृत्य परीक्षा द्वारा भी होती थी। ललित कला की शिक्षा का भी उत्तम प्रबंध था, इसके पर्याप्त प्रमाण हमें मिलते है। कुलीन परिवारों की स्त्रियों की तरह निम्न परवारों की स्त्रियाँ मनोरंजन के लिए ललित कलाओं में रूचि नहीं लेती थी बल्कि वह इन कलाओं द्वारा अपने पिता या पति की सहायता के लिये अर्थ के अर्जन के लिए करती थी।

नारियों में धार्मिक शिक्षाः नारियों को अनिवार्य रूप से धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। ईश्वर का पूजन तो सामान्य बात थी लेकिन कन्यायें अपने अभिष्ट की प्राप्ति के लिए कठिन तप जिसमें अनेक धार्मिक नियमों का पालन करना पड़ता था, वह करती थी। भुवना ने समस्त आसक्ति स रहित योग में सिद्धि प्राप्त की और पूरे पृथ्वी का भ्रमण किया। कन्याओं को नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। उन्हें पत्नी के कर्तव्यों का बोध करा दिया जाता था। यह

नैतिक शिक्षा का परिणाम है कि उस समय पुरूषों की तरह ही स्त्रियों ने भी यश प्राप्त किया और इन स्त्रियों की संख्या भी कम नहीं थी।

नारी का शिक्षक एवं गुरू रूपः ऐतरेय और कोशित्की ब्राह्मणों से यह पता चलता है कि प्राचीन काल में महिलायें शिक्षिका भी होती थी। आश्वलायन गृहसूत्र (यह ऋग्वेद की आश्वलायन शाखा से संबंधित गृहसूत्र है। यह गृहस्थ जीवन से संबंधित संस्कारों और रीति रिवाजों का वर्णन करता है।) से भी यह पता चलता है कि नारी एक शिक्षक के रूप में शिक्षिका का पद सुशोभित करती थी। पूर्वकाल में बड़ी संख्या में नारियाँ अध्यापन का कार्य कर रही थी। संस्कृत साहित्य में उपाध्याय एवं उपाध्यायी शब्दों का प्रयोग किया गया है। उपाध्याय की पत्नी को सम्मान के रूप में उपाध्यायनी कहा जाता था। किन्तु उपाध्याया विदुषी नारियों को कहा जाता था, जो अध्यापन के कार्य में लगी रहती थी। आश्वलायन गृहसूत्र में तीन शिक्षिकाओ के उल्लेख किये गये हैं। पाणिनी के समय में स्त्रियाँ अध्यापिकाएँ होती थी। अतः उन्होंने अध्यापन काय करने वाली को आचार्या और उपाध्याया नाम दिया है। अनेक महिलाएँ शिक्षिका बन कर अध्यापिकाओं का जीवन व्यतीत करती थी। जो अपना शिक्षण कार्य उत्साह और लगन के साथ निष्ठापूर्वक सम्पन्न करती थी। इनकी अलग शिक्षा शालायें हुआ करती थी। जहाँ महिलायें जाकर शिक्षाग्रहण करती थी। ऐसी महिला शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था उपाध्यायें ही करती थी। पंतजलि ने औद्यमेध्या नामक आचार्य का उल्लेख किया हैं, यह उल्लेख उनके योगसूत्र में मिलता है। इस आचार्य का उल्लेख सम्भवतः योग के सिद्धान्त के सन्दर्भ में किया गया है। उनमें पढने वाली छात्रायें औदमेधा कहलाती थी। छात्राओं को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए शालायें हुआ करती थी। वात्स्यायन ने स्त्रियों के लिए अंग विद्याओं के अध्ययन करने का उल्लेख किया है जिनकी संख्या 64 है। इन्होंने संगीत और नृत्य को भी स्त्रियों के लिए अनिवार्य माना। राजश्री को नृत्य एवं संगीत की पूरी शिक्षा प्राप्त थी। उन्होंने उपाध्याया, उपाध्यायी, आचार्या आदि का उल्लेख किया है। यद्यपि मनु, याज्ञवल्क्य, यम आदि स्मृतिकारों ने स्त्री शिक्षा पर प्रतिबंध लगा दिया तथा उनके उपनयन में वैदिक मंत्रों का उच्चारण भी बन्द कर दिया और बाद में उनका उपनयन संस्कार भी बन्द कर दिया गया। साधारण परिवारों में तो बाद में शिक्षा का प्रसार बिल्कुल अवरूद्ध हो गया था, परन्तु उच्च परिवारों और राज घरानों में शिक्षा का प्रचार पूर्ववत् ही रहा। नारी शिक्षा के दो रूप थे। एक अध्यात्मिक और दूसरा व्यावहारिक। अध्यात्मिक ज्ञान में वृहस्पति,

भगिनी, भुवना, अपर्णा, एकपर्णा, मेना, धारणी, सतरूपा आदि कन्याओं के नामों का उल्लेख है जो ब्रह्मवादिनी थी।

निष्कर्ष

अतः ज्ञानपिपासुओं को ज्ञान प्राप्ति के लिए घर से बाहर जाना पड़ा । इस प्रकार बाहर जाने वाले छात्रों की तरह ही छात्राएँ भी शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरूकुल तथा दूरस्थ शिक्षण संस्थान में जाने लगी। लेकिन उसके उदाहरण बहुत कम मिलते है। संभवतः जब समाज में योग्य नारी शिक्षक उपलब्ध हो जाती होगी तब उन्हीं के संरक्षण में कन्याओं को भेजा जाता रहा होगा। किन्तु नारी शिक्षक के अभाव में बाध्य होकर आचार्यो के पास पुत्रियों को शिक्षा प्राप्ति के लिए भेजना पड़ता रहा होगा। उस काल में गंधर्व विवाह समाज में सामान्य था। सह शिक्षा में कन्याओं के अभिभावको को किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं रहती थी। किन्तु बाद में सह शिक्षा का परिणाम कभी–कभी गंधर्व विवाह में बदला जाता था। जिससे कन्याओं के नैतिक पतन की संभावना बढ़ने लगी थी।

इस प्रकार लोग कन्याओं के लिए घर पर ही शिक्षक नियुक्त करके कन्याओं की उच्च शिक्षा दीक्षा का प्रबंध करने लगे। हरित के द्वारा कन्याओं की शिक्षा घर पर ही उनके पिता, चाचा, भाई के द्वारा होनी चाहिए। इसी प्रकार मनु ने भी कन्याओं का पुरूष के साथ अध्ययन करने के लिए घर से बाहर भेजने का पक्ष नहीं दिया। उस समय छात्राओं का कितना प्रतिशत सह शिक्षा ग्रहण करता था। यह अस्पष्ट हैं किन्तु निश्चय ही यह संख्या अधिक नहीं थी।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल जे0सी0: स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास अर्थ बुक डिपो, 302 नाई बाल करोल बाग, नई दिल्ली।
- आचार्य नरेन्द्र देव – बौद्ध धर्म दर्शन।
- उपाध्याय, गंगा प्रसाद – अद्वैतवाद
- उपाध्याय, बलदेव – भारतीय दर्शन
- गुप्ता, लक्ष्मीनारायण – शिक्षा दश्चन
- चौबे, एस0पी0 – भारत और पश्चिम के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, तुलनात्मक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- चौबे हीराला, बेसिक शिक्षा, जन कल्याण प्रकाशन, कल्कत्ता।

- टैगोर, रवीन्द्रनाथ, शिक्षा।
- दीवानचन्द्र – पश्चिमी दर्शन
- दीक्षित, जगदीशचन्द्र – आचार्य नरेन्द्र देव
- दूबे, रमाकान्त, विश्व के कुछ महान शिक्षाशास्त्री।
- नागर, डॉ0 पुरूषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन।
- पाण्डेय, रामसकल–शिक्षा दर्शन, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री।
- बाला, बाजपेयी शुक्ला–शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार
- गिल आत्मानंद – भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक।
- राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन
- लाल, बसन्त कुमार, समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास, जवाहर नगर, दिल्ली, 1995
- वर्मा, रामपाल सिंह, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2002
- वर्मा बैजनाथ, प्रसाद, विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
- वीर अर्जुन, स्वतंत्रता दिवस अंक, 1970